अध्याय – २

फरुखाबाद घराने का उद्‌भव एवं विकास

दिल्ली एवं अजराड़ा घराने के बाद तीसरा क्रम फरुखाबाद घराना आता है । इस घराने पर लखनौ एवं पूरब बाज याने पखावज सबंधित बोलों का प्रभाव अधिक रहा है ।

''फरुखाबाद घराने का उद्‌भव फरुखाबाद नामक गाँव से संबंधित है । इस घराने की पूर्णताः स्वतंत्र वादन शैली नही हैं क्योंकि इस घराने पर लखनौ घराने का पूरा प्रभाव रहा है और फरुखाबाद घराना लखनौ का एक भाग है ।''[१] ''पं.अरविन्द मुलगाँवकरजी के मतानुसार फरुखाबाद घराना यह अजराड़ा घराने के साथ ही विकसित हुआ ।''[२] ई.स. १७८० के आसपास इस घराने का उद्‌भव माना जाता है ।

२:१ फरुखाबाद घराने के मुल संस्थापक :

फरुखाबाद घराने के संस्थापक उ. हाजी विलायत अली खाँ थे । जो फरुखाबाद गाँव में रहते थे । उ. हाजी विलायत अली खाँ ने तबले की तालीम लखनौ घराने के खलीफा उ. बखशु खाँ जी से प्राप्त की थी और उ. बखशु खाँ उ. सिध्धार खाँ के वंशज थे । ''उ. हाजी साहब ने संपूर्ण लखनौ घराने की तालीम उ. बखशु खाँ और उनकी सुपुत्री मोती बीबी (जो हाजी विलायत अली खाँ साहब की धर्म पत्नी थे) से प्राप्त की । मोतीबीबी घरानेदार तबला वादीका थी । जब मोतीबीबी का विवाह उ. हाजी विलायत अली खाँ से हुआ तब लखनौ घराने के संस्थापक उ. बखशु खाँ जी ने ५०० गतें दहेज में दी थी । और बाद में वह सभी गतें 'दहेज की गत' नाम से प्रसिद्ध हुई ।'' [३]

''उ. हाजी साहब अपने धर्म क्षेत्र 'हज' करने सात बार गये और अपने अल्ला से एक ही दुआँ मांगते थे कि उनकी रचनाएँ अत्यंत प्रभावशाली हो, क्योंकि उ. हाजी साहब उत्तम तबलावादक, गुरु और रचनाकार थे । उनकी रचनाएँ विद्वानों के बीच में प्रस्तुत होती थी और उन्हें खुब दुआएँ मिलती थी ।'' [४]

उ. हाजी विलायत अली खाँ धार्मिक थे । ''मदन–एँ–मौसीकी पुस्तक में हकीम महम्मदजी ने उल्लेख किया है कि हाजी साहबने सात बार हज करने के बाद अपने स्वतंत्र कार्यक्रम करना बंद किया और बाद में उन्होंने तबले की अनेक रचनाएँ की और अपने शिष्यों को वह रचनाएँ सिखाई ।''[५]

''उ. अमीर हुसैन खाँ के शब्दों में तबले के स्वतंत्र वादन के कार्यक्रम में कोई बंदिश हाजी साहब की बजाई जाये तो वह दर्जेदार मानी जाती थी और वह 'हाजी साहब की रचनाओं का घराना' नाम से भी जानी जाती थी ।''[६]

उ. हाजी साहब ने संपूर्णतः नई पद्धति का तबले पर चिंतन करके फरुखाबाद घराने को जन्म दिया । शोधार्थी ने गहन चिंतन करने के बाद पुष्टि की है कि अजराड़ा और फरुखाबाद घराने का समय ई.स. १७८० न होकर करीबन ई.स. १८५० के दौरान का होगा ।

२:२ फरुखाबाद घराने का विकास :

''उ. हाजी साहब फरुखाबाद घराने के संस्थापक एवं प्रथम वादक रहे है । इसके पश्चात फरुखाबाद घराने का विकास हाजी साहब की परंपरा में उनके शिष्यों का महत्व पूर्व का योगदान रहा है । हाजी साहब को दहेज में जो गतै प्राप्त हुई वह सबसे बड़ा फरुखाबाद घराने के विकास का कारण था ।''[७] ''जब हाजी साहब लखनौ में थे तब उन्होंने अपनी नई बंदिशों की रचना की । परंतु जब वह ई.स.१८५७ रामपुर में आयें तब उन्होंने उनके पास जो लखनौ घराने का ज्ञान था, उस पर अपने चिंतन और मनन से एक नई वादन पद्धति को जन्म दिया जो 'फरुखाबाद घराना' नाम से प्रसिद्ध हुई । उस समय रामपुर के नवाब युसुफ अली संगीत और नृत्य के शौकीन थे और उन्होंने अपने दरबार में अनेक संगीतज्ञों को स्थान दिया था उसमें हाजी साहब को भी रामपुर दरबार में स्थान मिला । बाद में हाजी साहब के शिष्यों ने भी इस दरबार में निरंतर तबला वादन की सेवा दी । अतः रामपुर दरबार का भी फरुखाबाद घराने के विकास अनन्य योगदान रहा है ।''[८]

उ. हाजी साहब के चार पुत्र थे । जिनके नाम उ. निसार हुसैन, अमान अली खाँ, हुसैन अली खाँ और उ. नन्हें अली खाँ आदि का भी योगदान फरुखाबाद घराने के विकास में रहा है । उ. निसार हुसैन खाँ रामपुर के दरबार में प्रसिद्ध कलाकार थे । उ. अमान अली खाँ जो लक्वा रोग सें पीडीत थे और वह जयपुर में निवास करते थे । उन्होंने अपने शिष्यों को तालिम दी । उनके अनेक शिष्यों में पं. जियालाल जी कथक नृत्य के कलाकार थे । उनके तीसरे पुत्र हुसैन अली खाँ ने अपने पिताजी से तालीम पाई थी । उनके प्रमुख शिष्यों में उ. मुनीर खाँ का बहुत बड़ा योगदान है । उ. मुनीर खाँ ने मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और खासतौर से महाराष्ट्र में फरुखाबाद घराने का विकास किया । उनके चौथे पुत्र नन्हें अली खाँ के पौत्र उ. मसित अली खाँ जो रामपुर के विद्वान तबला वादक थे । बाद में वह रामपुर छोडकर कलकत्ता गए और वही अपने शिष्यों को तालीम दी । उनके पुत्र उ. करामत अली खाँ महान तबला वादक हुए । करामत अली खाँ के पुत्र उ. साबिर खाँ जी ने कलकत्ता में फरुखाबाद घराने का विकास किया ।

''हाजी साहब के दामाद उ. हुसैन बखश हैद्राबाद में रहते थे । उन्होंने भारत का पश्चिम बाज में फरुखाबाद घराने का विकास किया । उनकी परंपरा में उ. दाउद खाँ ने फरुखाबाद घराने का विकास किया । उ. दाउद खाँ को 'दक्षिण का थिरकवाँ' के नाम से जाना जाता है ।''[९]

फरुखाबाद घराने के विकास में उ. सलारी मियाँ और उ. चुड़ियावाले इमाम बरुश का योगदान महत्वपूर्ण रहा हैं । वह दोनों हाजी साहब के शिष्य थे । उ. सलारी मियाँ ने चलन अथवा चाला की रचना का आविष्कार किया और दिल्ली बाज के पेशकार में जरूरी बदलाव करके फरुखाबाद घराने का स्वतंत्र पेशकार के रूप में प्रस्तुत किया । जिस पेशकार को आज भी तबला वादक अपने स्वतंत्र वादन के प्रारंभ में बजाते हैं । उ. थिरकवाँ खाँ साहब ने पेशकार की रचना को खूब प्रसिद्ध किया ।

''तबले पर दिल्ली और पुरब पुस्तक के लेखक श्री सत्यनारायण वशिष्टजी के अनुसार, चुड़ियावाले इमाम बखशजी की परंपरा में उनके शिष्य एवं वारस को 'भटोला परंपरा'

के नाम से जाना जाता था ।'' [१०] ''उ. जहाँगीर खाँ जो इन्दोर में रहते थे वह उ. मुबारकअली खाँ के शिष्य थे अतः वह भी हाजी जी की परंपरा में थे । उ. जहाँगीर खाँ जी ने इन्दोर में फरुखाबाद घराने का प्रचार प्रसार किया ।''[११]

शोधार्थी के मत अनुसार :

(१) इन्दोर और मध्यप्रदेश में जहाँगीर खाँ ने फरुखाबाद घराने का विकास किया ।

(२) महाराष्ट्र में उ. मुनीर खाँ उनके शिष्य उ. अहमद जान थिरकवाँ और उनके भतीजे उ. अमीर हुसैन खाँ साहब का फरुखाबाद घराने के विकास में अनन्य योगदान रहा है ।

(३) भारत का पश्चिम भाग तथा हैद्राबाद में उ. शेख दाउद खाँ ने फरुखाबाद घराने को विकसित किया ।

(४) कलकत्ता में उ. करामत उल्ला खाँ उनके पुत्र उ. साबिर खाँ तथा उनके शिष्य पं. ज्ञानप्रकाश घोषजी, पं. निखिल घोषजी का फरुखाबाद घराने के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

शोधार्थी के चारों विधान अनुसार, भारत में फरुखाबाद घरानों का तबला अलग–अलग प्रांत के अनुसार अपनी विशिष्ट पद्धति सें स्वतंत्र है और चारों पद्धतियों में अलग–अलग वादन सुनने को मिलता है जिसका योगदान तबले के विद्धवानो को जाता है । प्रत्येक कलाकार अन्य घरानो की तुलना में अपनी निजी वादन पद्धति से स्वतंत्र वादन प्रस्तुत करता है । अतः भारत के सभी तबला वादक फरूखाबाद घराने से जुडे हुए है ।

२:२:१ उ. हाजी विलायत अली खाँ का समय :

''उ. हाजी साहब फरुखाबाद से लखनौ तबला सीखने हेतु आये । उन्होंने उ. बखशु खाँ जी से तबले की तालीम ली । ई.स. १८५७ में हाजी साहब राजकीय कारकीर्दि से निवृत हुए और रामपुर दरबार में संगीत और नृत्य केन्द्र पर तबले का प्रचार–प्रसार किया ।'' [१२]

''फरुखाबाद शहर उत्तर प्रदेश का छोटा शहर था । इस घराने का विकास ज्यादातर लखनौ, रामपुर एवं कलकत्ता में हुआ परंतु हाजी साहब फरुखाबाद में रहते थे इसलिए इस घराने का नाम फरुखाबाद घराना हुआ ।'' [१३]

पं. अरविंद मुळगाँवकर जी के 'तबला' पुस्तक के अनुसार अजराड़ा और फरुखाबाद घराने का उद्‌गम एक ही समय पर हुआ था इस आधार पर शोधार्थी मानता है की अजराड़ा घराने का समय ई.स. १७८० था परंतु वही फरुखाबाद घराने का समय नहीं रहा होगा । क्योंकी एक ही समय पर दोनो घरानों का उद्‌गम असंभव है अर्थात् कोई भी दो घरानो के उदभव में करीबन ४० से ५० वर्षो का अंतर रहता है अतः हाजी विलायत अली खाँ का समय इ.स. १८२५ के बाद का ही होना चाहिए, क्योंकि उन्होंने १० से १५ वर्ष तक तबले की शिक्षा पाई होगी । इस आधार पर उनका समय १८२५ के बाद का माना जाता है । इसीलिए, फरुखाबाद घराने का समय ई.स. १८४० से ई.स. १८५० के आसपास हुआ होगा, ऐसा शोधार्थी का मानना है ।

२:२:२ फरुखाबाद घराने की विशेषताऐं :

फरुखाबाद घराना खुला बाज के अंतर्गत आता है । ''पं. विजय शंकर मिश्रजी के अनुसार फरुखाबाद घराना की वादन पद्धति दिल्ली और लखनौ का मिश्रण है । जिसे 'मणिकंचन संयोग' कहा गया है ।'' [१४] फरुखाबाद घराने की वादनशैली में पखवाज का प्रभाव रहा है परंतु नृत्य का प्रभाव नहीं रहा है ।

''उ. अहमद जान थिरकवाँ के मततानुसार, तबले पर 'अलग–अलग वाद्यों का प्रभाव बंदिश स्वरूप में दिखाई देता है । उसके बावजुद भी वह बंदिश स्वतंत्ररूप से तबले की ही मेहसूस होती है ।' इस आधार पर फरुखाबाद घराने का तबला यह शुद्ध एवं स्वतंत्र है । जिसके उपर अन्य वाद्यों की ध्वनि नहीं सुनाई देती है । इसलिए इस घराने को संपूर्ण घराना माना जाता है । क्योंकि यह घराना स्वतंत्र वादन एवं साथ संगत के लिए उपयुक्त है । फरुखाबाद घराने के

वादन में लखनौ घराने का 'थपीया बाज' और दिल्ली घराने का 'किनार का बाज' का प्रभाव दिखता है । इसलिए इस घराने के कलाकार अपनी रचनाओं में मेदान (लव) और चाटी का खुब सुंदर तरीके से प्रयोग करते है । अतः इस घराने के बोलो की ध्वनि कर्णप्रिय और आकर्षक लगती है ।'' [१५]

शोधार्थी मानता है कि फरुखाबाद घराने की रचनाओं को विद्वान कलाकारों ने एक नई दृष्टि और विचार दिए । इस घराने की रचनाओं एवं वैशिष्टयका अभ्यास करने के बाद शोधार्थी मानता है कि इस घराने के कलाकार न ही केवल अपना खुबसूरत वादन प्रस्तुत करते है परंतु साथ–साथ अप्रतिम रचनाएँ भी बजाते हैं और अच्छे रचनाकार भी होते हैं । इस घराने में अच्छे रचनाकार भी हुए हैं ।

२:३ लखनौं घराने के प्रवर्तक एवं फरुखाबाद घराना :

दिल्ली घराने के प्रवर्तक उ. सिध्धार खाँ को तीन पुत्र थे । जिन में एक बुगरा खाँ, दुसरा घसीट खाँ और तीसरे अज्ञात थे और इसी अज्ञात पुत्र के दो वंशज थे उनमें उ. मोदु खाँ और उ. बखशु खाँ । इन दोनों कलाकारों ने लखनौ की परंपरा आगे बढ़ाई । अर्थात उ. सिध्धार खाँ के तीसरे पुत्र ने लखनौ घराने की नींव डाली । ''डॉ. योगमाया शुक्लजी के अनुसार लखनौ घराने के बखशु खाँ साहब को पुत्र न होने के कारण उन्होंने तबले का पुरा ज्ञान और तालीम उनकी पुत्री को दीया और पुत्री का विवाह हाजी साहब से हुआ जो फरुखाबाद घराने के प्रवर्तक रहे ।'' [१६]

२:४ उद्देश्य :

शोधार्थी के गहन चिंतन करने के बाद प्रवतर्क का मुख्य उद्देश्य यही रहा होगा की तबले की मूल बंदिशे एवं उनके वैशिष्टय को अपनी नवीन एवं सर्जनात्मक पद्धति से प्रस्तुत करना था । उ. हाजी साहब ने लखनौ घराने की वादन पद्धति में नए परिवर्तन कियें तथा उस घराने की मर्यादा को ध्यान में रखकर अपनी स्वतंत्र शैली की स्थापित की । जो फरुखाबाद घराने के

नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

लखनौं घराने की बंदिशे नृत्य पर आधारित थी और उस बाज में पखावज वाद्य का प्रभाव था जो स्वतंत्र तबला वादन एवं गायन और वाद्य की संगती में एक जैसी ही प्रयोग होती थी, जो उचित नहीं था । अतः हाजी साहब ने इन बातों पर ध्यान देकर फरुखाबाद घराने को नई दृष्टि दी यही मुख्य उद्देश्य रहा होगा ।

२:५ आवश्यकता :

तबला और पखावज वाद्य में हाथ का रखाव पूर्णतः भिन्न है । लखनौ घराने में पखावज का प्रभाव होने के कारण बायें के हिस्से में पाँचों उंगलियों से खुला बायाँ बजता था । दायें में भी मैदान का अधिक प्रयोग होता था । इसलिए दोनों की ध्वनि एक जैसी ही सुनाई देती थी । ''तबले का मुख्य अंग कायदा है और लखनौ घराने में अविस्तारक्षम बंदिशें अधिक प्रस्तुत की जाती है । अतः कायदा, गते, गत–कायदा, फरुखाबाद घराने में प्रमुख होने के कारण हाथ की रखावट में जरुरी बदलाव करके लय और स्याही का सुंदर और आकर्षक प्रयोग हुआ जो इस घराने की मुख्य आवश्यकता थी ।'' [१७]

२:६ प्रयोग :

उ. हाजी विलायत खाँ ने दिल्ली बाज की किनार और लखनौ बाज के मैदान का सुंदर प्रयोग करके एक नई पद्धति का आविष्कार किया । उन्होंने पेशकार, रेला, गत, कायदे का प्रयोग अपने स्वतंत्र वादन में किया जो लखनौ घराने में प्रचलन में नहीं था । फरुखाबाद बाज के अनुसार उन्होंने अनेक नई बंदिशों की रचना की और वह प्रसिद्ध हुई जिसे अन्य घरानों ने भी अपनाया । दायें और बायें पर विशेष तरह की ध्वनि उत्पन्न करके इस घराने के कलाकारों ने बहुत बड़ा योगदान दिया है । इस घराने के रचनाओं में बोलो को विशेष ढंग से प्रस्तुत किया जाता है कि वह सुनने में मधुर और आकर्षक लगती हैं । एवं बंदिशों में एक ही बोल को लेकर

अलग–अलग 'जोड़ा' बजाया जाता है । 'धीर धीर' शब्द में पूरी हथेली का प्रयोग किया जाता है । काल्पनिक घटनाओं पर आधारित रचनाओं को ताल के खंडानुसार रचनाएँ बनाई जाती है और उसे प्रस्तुत की जाती हैं ।

पं. अरविंद मुळगांवकर जी के अनुसार इस घराने में बोलों की पढंत और निकास में अंतर रहा है । जिस तरह से बोल बोले जाते है वैसे ही बजायें नहीं जाते । अर्थात् कही बोलो का अपभ्रंश किया जाता है, जो इस घरानें की विशेषता हैं । उ. हाजी साहब ने इन्हीं विशेषताओं पर प्रकाश डाला और अपनी स्वतंत्र शैली का प्रयोग किया ।

२:७ सफलता :

फरुखाबाद घराने में लखनौ घराने के नृत्य के प्रभाव को अलग करके उ. हाजी विलायत अली खाँ ने अपनी नई परंपरा का आविष्कार किया और नई रचनाएँ बनाकर उसे लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया । श्रोताओ ने एवं विद्वानों ने उन बंदिशों को स्वीकार करके मान्यता दी, यह सबसे बड़ी सफलता है । इसलिए इस घरानें को स्वतंत्र मान्यता प्राप्त हुई और तबले के मुख्य घरानों में महत्वपूर्ण स्थान मिला ।

पाद टिप्पणी :

(१) माईणकर, सुधिर, तबला वादन में निहित सौन्दर्य, सरस्वती पब्लिकेशन, मुंबई, पृ. २१५

(२) मुळगाँवकर, अरविंद, तबला, पोप्युलर प्रकाशन, मुंबई, ISBN : 978-81-7185-526-1, पृ. २७२

(३) साक्षात्कार : पं. अरविंद मुळगाँकर, मुंबई, २ फरवरी, २०१७, सुबह १० बजे

(४) op.cit. मुळगाँवकर, अरविंद, पृ. २७६

(५) करमईमाम, मोहम्मद, मदन–ऐ–मौसिकी

(६) मिश्रा, पं. विजयशंकर, तबला पुराण, पृ. ३१

(७) सक्सेना, वसुधा, ताल के लक्षण स्वरूप में एकरूपता, पृ. २२८

(८) मिस्त्री, डॉ. आबान, तबला और पखवाज के घराने एवं परंपराएँ, पृ. १४९

(९) साक्षात्कार : पं. अरविंद मुळगाँकर, मुंबई, २ फरवरी, २०१७, सुबह १० बजे

(१०) वशिष्ट, सत्यनारायण, तबले पर दिल्ली और पूरब, पृ. ५६

(११) op.cit. मिस्त्री, डॉ. आबान, पृ. १५१–१५२

(१२) वही, पृ. १४८

(१३) op.cit. मिश्रा, पं. विजयशंकर, पृ. २९

(१४) वही, पृ. २९

(१५) op.cit. माईणकर, सुधिर, पृ. २१६

(१६) op.cit. सक्सेना, वसुधा, पृ. २१८

(१७) साक्षात्कार : पं. अरविंद मुळगाँकर, मुंबई, २ फरवरी, २०१७, सुबह १० बजे